श्री दुर्गा जी की आरती

माँ अम्बे की आरती अमृत ज्योति

ॐ श्री माता दुर्गायै नमः ॐ

॥ श्री दुर्गा जी की आरती ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥

माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दो नैना, चन्द्रवदन नीको॥

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग कृपाण धारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी॥

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती॥

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥

चौंसठ योगिनी मंगल, गावत नृत्य करत।
भैरव रहत आगे, जय जय जय अम्बे॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरतारी।
भक्तन की दुख हरता, भव भय हारी॥

माँ की आरती जो कोई, नर गावे चित लाई।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पाई॥

॥ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ॥

आरती के पश्चात

माँ दुर्गा से अपने परिवार, समाज और समस्त जीवों के कल्याण, सुख, शांति, शक्ति और सद्बुद्धि की प्रार्थना करें।